थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

लिंग अर्थशास्त्र

डॉ. राजेश मौर्य
सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शासकीय नेहरू महाविद्यालय, सबलगढ़ जिला मुरैना
Email-id:- dr.rajeshmourya1973@gmail.com
डॉ. गरिमा दिवान
विभागाध्यक्ष, सह प्राध्यापक, अंग्रेजी, आई. एस. बी. एम, विश्वविद्यालय, नवापारा (कोसमी), छुरा, जिला- गरियाबंद

शोध सार

सामान्य शब्दों में, लिंग का, अर्थशास्त्र आर्थिक परिणामों और निर्णय लेने की, प्रक्रियाओं पर, लिंग के, प्रभाव की, खोज करता है। यह हमें बताता है कि, महिला व पुरुषों, के बीच, आर्थिक क्षेत्र (वेतन, रोजगार के अवसर, श्रम बाल में भागीदारी, कार्य स्थल की दिशाएं) में, जो असमानताएं व्याप्त हैं, उन्हें आर्थिक सिद्धांतों व अनुभवजन्य तरीकों से, किस प्रकार समाप्त किया जा सके, ताकि समाज व देश में, लैंगिक समानता स्थापित की जा सके।

समाज व देश में, व्याप्त लैंगिक असमानताओं को, समझने के लिए, जो लिंग अर्थशास्त्र की, रचना की गई है, उसमें किसी, एक देश का, सहयोग नहीं है बल्कि संपूर्ण विश्व के, अधिकांश देशों ने, एक समान रूप से, सहयोग किया है। आपको बता दे कि, विश्व का अंतरराष्ट्रीय संगठन, (यूनेस्को) अर्थात संयुक्त राष्ट्र संघ, लिंग समानता के लिए, प्रतिबद्ध है। और उसने अपने 56 सदस्य देशों से, यह आग्रह किया है कि, महिला व पुरुषों, दोनों को, एक समान रूप से, अवसर व अधिकार प्रदान करने का, कार्य करें। यह महिलाओं की, आर्थिक क्षमता व अवसरो में भी, सुधार करने का, कार्य करता है।

संपूर्ण विश्व में, लिंग अर्थशास्त्र को, प्रोत्साहित करने के लिए, अनेक संगोष्ठियों, सम्मेलनों व आर्थिक प्रशिक्षणो का भी, आयोजन किया जा रहा है। ताकि लिंग अर्थशास्त्र का, प्रचार–प्रचार करने के, साथ–साथ, अधिकांश लोग, विशेष रूप से, पुरुष विद्वान दार्शनिक या अर्थशास्त्री, इसे (लिंग अर्थशास्त्र) समझ सकें और अपना योगदान दे सकें।

लिंग अर्थशास्त्र, विशेष रूप से, महिलाओं के, संदर्भ में, आर्थिक क्षेत्र (वेतन, रोजगार, श्रम बल, लिंग असमानताओं) से संबंधित है। इसीलिए, इस शोध पत्र में, लिंग, लिंग समानता की अवधारणा, लिंग अर्थशास्त्र या लैंगिक असमानताओं और उसके महत्व पर, आधारित है, जिसमें हम, सर्वप्रथम लिंग को, समझते हुए, लिंग असमानताओं पर, अपना ध्यान आकर्षित करने के साथ–साथ, यह समझने का, प्रयास करेंगे कि, लैंगिक असमानता, कौन–कौन से क्षेत्रों में, व्याप्त है, आदि।

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

मुख्य बिंदुः—वेतन, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, मौलिक अधिकार, मानव पूंजी संसाधन।

प्रस्तावनाः—हम, सभी, यह अच्छी तरह से जानते हैं कि, प्राचीन काल से ही, महिलाओं या लड़कियों, के प्रति, शोषण एवं अत्याचार की, एक लंबी दास्तां कायम रही है। उन्हें महिलाओं ना तो, किसी भी, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, भाग लेने का, अधिकार था और ना ही, शिक्षा प्राप्त करने का, उन्हें कभी—भी, आगे बढ़ने नहीं दिया, जिसके परिणामस्वरुप, महिलाएं पिछड़ती गई और महिला व पुरुषों, के बीच, लिंग भेदभाव की, एक नई अवधारणा ने, जन्म लिया। इसी लिंक भेदभाव की, अवधारणा पर, एक नए विषय, जिसे लिंग अर्थशास्त्र कहते हैं, का आगाज हुआ है।

सामान्य शब्दों में, लिंग अर्थशास्त्र, वह अर्थशास्त्र है, जिसके अंतर्गत, हम लिंग भेदभाव या असमानताओं, के पीछे, छिपे तंत्र को, समझने के लिए, आर्थिक एवं अनुभवजन्य सिद्धांतों का, प्रयोग करते हैं।(1) यह हमें बताता है कि, महिला एवं पुरुषों, के बीच, वेतन एवं रोजगार, के संबंध में, किस हद तक, असमानता व्याप्त है और इस दृष्टि से, किसी भी, देश की, अर्थव्यवस्था की, आर्थिक गतिविधियों में, महिलाओं का, नगण्य योगदान है, जोकि उचित नहीं है, क्योंकि महिलाओं, के योगदान, के बिना, किसी भी, देश की, अर्थव्यवस्था अपना आर्थिक विकास नहीं कर सकती है। जैसा कि क्रिस्टीन लागार्दे (2014) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की, प्रबंध निदेशक ने कहा है कि—यदि हम, आर्थिक गतिविधियों से, महिलाओं को, बाहर रखते हैं तो, यह अर्थव्यवस्था के लिए, खराब होगा, क्योंकि 21वीं, सदी की, वैश्विक अर्थव्यवस्था में, उनका (महिलाओं) योगदान, वरदान साबित हो सकता है।(2)

सामाजिक विज्ञान, के अर्थशास्त्र विषय के, अंतर्गत, लिंग अर्थशास्त्र, जोकि महिला व पुरुषों, के बीच, आर्थिक संबंधी, असमानताओं को, व्यक्त करता है, विद्यार्थियों तथा अर्थशास्त्रियों, के बीच, एक महत्वपूर्ण बहस का, मुद्दा बन गया है, और जैसे—जैसे लिंग भेदभाव या आसमानता में, वृद्धि हुई है, वैसे—वैसे, यह एक रुचि का, विषय बन गया है। हालांकि लिंग अर्थशास्त्र की, उत्पत्ति के, संबंध में, यह कहा जाता है कि, अर्थशास्त्रियों का, ध्यान सन 1930 और 1950 के, दशक में, लिंग संबंधी, आर्थिक विश्लेषण, पर गया था। परंतु इसकी (लिंग अर्थशास्त्र) व्यवस्थित शुरुआत सन 1970 के, दशक से, मानी जाती है।(3) आज, यह अर्थशास्त्र विषय में, लिंग के, साहित्य में, शामिल हो गया है। वर्तमान में, संपूर्ण विश्व में, ऐसे, कई विश्वविद्यालय हैं, जहां पर, लिंग अर्थशास्त्र या नारीवादी अर्थशास्त्र से, संबंधित पाठ्यक्रम संचालित हैं, और विद्यार्थियों से, लेकर, एकेडमिक विद्वानों, साहित्यकारों तथा अर्थशास्त्रियों तक में, एक लोकप्रिय विषय बन गया है।

यह शोध पत्र, लिंग अर्थशास्त्र पर, आधारित है। जिसमें हम, सर्वप्रथम लिंग, लिंग समानता को, समझते हुए, लिंग भेदभाव या असमानता, के पीछे, छिपे कारणों को, व्यक्त करने के, साथ–साथ, लिंग अर्थशास्त्र के, महत्व पर, प्रकाश डालेंगे।

अध्ययन के उद्देश्य

मैंने, लिंग अर्थशास्त्र, नामक शोध पत्र को, पूर्ण करने के लिए, निम्नलिखित उद्देश्यों का, निर्धारण किया है।

1. लिंक क्या है?, तथा लिंग समानता को, समझना।
2. लिंक अर्थशास्त्र या लैंगिक असमानताओं को, समझना।
3. लिंग अर्थशास्त्र, के महत्व को, समझना।

अध्ययन की सामग्री

लिंग अर्थशास्त्र, जोकि विद्यार्थियों तथा अर्थशास्तियों, के बीच, एक लोकप्रिय विषय बना हुआ है, का, साहित्य, अभी हाल ही में, एक लिंग असमानता की, अवधारणा के, रूप में, प्रकट हुआ है। यह अर्थशास्त्र (लिंग) महिलाओं और पुरुषों, के बीच, आर्थिक गतिविधियों (वेतन, रोजगार, श्रम बल) को, स्पष्ट करके, आर्थिक समानता पर, बल देता है। इससे संबंधित, जो भी, सहित उपलब्ध है, उसमें राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर, प्राप्त डाटा (संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व बैंक, आई.एम.एफ.) विभिन्न शोध पत्र, पुस्तक, शासकीय पत्र और इंटरनेट पर, उपलब्ध विभिन्न वेबसाइटों से लिए गए हैं।

लिंग की अवधारणा

मेरे विचार से, शायद ही, कोई होगा, जो यह नहीं जानता होगा कि, लिंग क्या है?, लिंग की, अवधारणा, विभिन्न भूमिकाओं और जिम्मेदारियां के, माध्यम से, यह स्पष्ट करने का, प्रयास करती है कि, कौन पुरुष है और कौन महिला, यह अवधारणा, विशेष रूप से, हिंदी व्याकरण में, बहुत ही, महत्वपूर्ण रूप से, संज्ञा शब्द, के अंतर्गत, यह पता लगाने का, प्रयास करती है कि, वह व्यक्ति, किस जाति का है, पुरुष या महिला।(4) आपको बता दें कि, लिंग शब्द, सबसे प्राचीन भाषा, संस्कृत से, लिया गया है, जिसका अर्थ, चिह्न या निशान होता है। इसलिए लिंग शब्द को, चिह्न या निशान, के रूप में, यह बोध कराने का, प्रयास करती है कि, वह स्त्री है या पुरुष, और यह, किस प्रकार, समाज में, विभेदक भूमिकाएं, जिम्मेदारियों को, व्यक्त करती है।

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

विश्व का, अंतरराष्ट्रीय संगठन, संयुक्त राष्ट्र संघ ने, इसे, (लिंग) इस प्रकार स्पष्ट किया है–समाज में, जीवन यापन करने वाले, पुरुष व महिलाएं, किस प्रकार, अपनी–अपनी भूमिकाओं, जिम्मेदारियां तथा अवसरों, के रूप में, कार्य करते हैं।(5) सामाजिक साहित्य में, कुछ लोग, जैविक या शारीरिक भेदभाव, के रूप में, देखते हैं, जोकि उचित नहीं है। इसे, सामाजिक या सांस्कृतिक रूप से, निर्मित मूल्यों या भूमिकाओं के, संदर्भ में भी, देखा जाता है, जो किसी, विशिष्ट समय या समाज में, महिलाओं एवं पुरुषों, के बीच, संबंधों को, प्रभावित करते हैं।

सामाजिक विज्ञान के, लिंग अर्थशास्त्र में, लिंग समानता, एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसीलिए यहां, लिंग समानता को, परिभाषित करने का, प्रयास किया गया है। इसके संबंध में, एम.गुलाम (2005) ने, अपने पेपर में उल्लेख किया है कि–समाज में, जीवन यापन करने, वाले पुरुषों और महिलाओं के, बीच, एक समान रूप से, संसाधनों से, लेकर, अवसर, मूल्यवान वस्तुओं व पुरस्कारों का, एक समान रूप से, विभाजन करना है।(6) आपको बता दें कि, लिंग समानता का, मतलब महिला व पुरुषों को, एक समान करना नहीं है, बल्कि समाज और देश में, महिला व पुरुषों, के बीच, अधिकारों, अवसरों, रोजगार, वेतन, श्रम और जो भी, पुरस्कार प्राप्त है, उनका, एक समान रूप से, विभाजन करना है। लेकिन, अब सवाल यह उठता है कि, लिंग असमानताओं, के क्या कारण है?, या कौन–कौन, ऐसे कारण हैं, जिनकी वजह से, लिंग असमानता, व्याप्त है, तो आपको, जानकर आश्चर्य होगा कि, इस पुरुष प्रभुत्व समाज में, पुरुष ने, अपने प्रभुत्व को, बनाए रखने के लिए, अनेक परंपराओं, प्रथायो, रूढ़ियो व अंधविश्वासों को संचालित किया, जोकि पूरी तरह से, महिलाओं के, खिलाफ थे, अर्थात् घर से, बाहर पर, प्रतिबंध, शर्म के लिए, पर्दा प्रथा, घर में, सभी सदस्यों, विशेष रूप से, पुरुषों के बाद, भोजन करना, किसी भी, धार्मिक या सांस्कृतिक समारोह में, महिलाओं की, प्रमुखता अर्थात व्रत या उपवास रखना, इत्यादि, ऐसे कारण थे, जिनकी वजह से, महिलाएं पिछड़ती गई और लिंग असमानता, के क्षेत्र में, मजबूती कायम रही। इसीलिए, सर्वप्रथम समाज व देश में, लिंग समानता हेतु, इन परंपरायों, प्रथाओं व रूढियो में, मजबूती के साथ, बदलावों की, आवश्यकता होगी। परंतु, यह तब तक, संभव नहीं, जब तक की, महिलाएं स्वयं प्रयास न करें। अर्थात समाज में, जीवन यापन करने वाली, महिलाओं को, एक साथ व मजबूती से, आवाज उठानी होगी और एक नए, समाज को, आकार देना होगा।(7)

सामाजिक साहित्य में, लिंग समानता को, संयुक्त राष्ट्र संघ ने, इस प्रकार परिभाषित किया है कि–समाज में, उपस्थित महिला व पुरुषों, के बीच, लैंगिक समानता स्थापित करने के लिए, पुरुषों व महिलाओं के, जैविक अंतर को, वे असर किए बिना, उन आवश्यक मूल्यों, मानदंडों, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं को, संदर्भित करता है।(8) और उन्हें संपूर्ण रूप

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

से, समाप्त या कम करने पर, जोर देता है। ताकि लैंगिक समानता को, कायम या संचालित किया जा सके।

उपरोक्त, विवरण, के आधार पर, यह कहा जा सकता है कि, वास्तव में महिलाओं को पीछे करने में, समाज की, दकियानुसी प्रथाएं, परंपराएं, रूणिया जिम्मेदार रही हैं, परंतु, मेरे विचार से, उन्हें (प्रथाएं, परंपराएं) कायम रखने में, शिक्षा का, अभाव भी, एक प्रमुख कारण रहा है। इसीलिए सर्वप्रथम महिलाओं को, शिक्षा प्राप्त करनी होगी। तभी, वह इन सामाजिक बुराइयों का, सामना करके, समाज में, लैंगिक समानता स्थापित करने में, सफल सिद्ध होगी।

लिंग अर्थशास्त्र

सामाजिक विज्ञान के, अर्थशास्त्र विषय के, अंतर्गत, उत्पन्न हुआ, लिंग अर्थशास्त्र, विशेष रूप से, महिला व पुरुषों, के बीच, व्याप्त असमानताओं के, पीछे के, तंत्र को, समझने के लिए, आर्थिक सिद्धांतों एवं अनुभवजन्य तरीकों पर, आधारित है। यह हमें बताता है कि, किसी भी, देश के, आर्थिक विकास में, महिलाओं की, भागीदारी कितनी महत्वपूर्ण है, जैसाकि, लिसा कोलोविच (2020) ने उल्लेख किया है कि—महिलाओं को, आर्थिक विकास के, साथ, संलग्न करना, अप्रत्यक्ष रूप से, आर्थिक प्रतिस्पर्धा में, वृद्धि के, साथ—साथ, आर्थिक उत्पादकता को, भी बढ़ता है।(9) जब महिलाएं, स्वयं आर्थिक क्षेत्र में, निर्णय लेंगे तो, अर्थव्यवस्था, के संबंध में, आर्थिक परिणाम, बेहतर होंगे और दुर्लभ संसाधनों का, अधिक कुशल आवंटन किया जा सकेगा। इस संबंध में, सी.शिएह (2019) ने, अमेरिका में, आर्थिक विकास में, महिलाओं की, प्रतिभाओं को, ध्यान में रखते हुए, एक अध्ययन किया—जिसमें यह पाया गया था कि, जब महिलाओं ने, आर्थिक क्षेत्र में, बेहतर प्रतिभा का, प्रदर्शन किया था तो, अमेरिका के, आर्थिक विकास में, 20 से 40% की वृद्धि हुई थी।(10) यह बदलाव, तब उत्पन्न हुए थे, जब पुरुषों की, तुलना में, महिलाएं कहीं अधिक शिक्षित थी। वास्तव में, किसी भी, देश के, आर्थिक विकास में, महिलाओं का, शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा, हमें किसी भी, क्षेत्र में, फिर वह चाहे, आर्थिक विकास हो या फिर सामाजिक, एक बेहतर समझ के, साथ, उन नीतियों, विशेष रूप से, आर्थिक क्षेत्र में, को समझने में, सहायता करती हैं, जो उनके लिए (महिलाओं) अपने अधिकारों को, प्राप्त करना चाहती हैं।

सामाजिक विज्ञान में, लिंग का, अर्थशास्त्र, विशेष रूप से, महिलाओं व पुरुषों के बीच, आर्थिक असमानताओं के कारणों, के संबंध में, आर्थिक सिद्धांतों व अनुभवजन्य तरीकों पर आधारित है। इसीलिए, अब, हम लैंगिक असमानता की, अवधारणा पर दृष्टि डालेंगे।

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

लिंग का, अर्थशास्त्र, यह वर्णन करता है कि, आर्थिक क्षेत्र में, महिलाओं और पुरुषों, के बीच, जो आसमानता व्याप्त है, उसका कारण, श्रम, के लिंग विभाजन में, निहित है।(11) इसीलिए इसे, (लिंग अर्थशास्त्र) हम, तब तक नहीं, समझ सकते, जब तक की, आर्थिक जनसांख्यिकीय मुद्दे जैसेः—महिलाओं की प्रजनन, क्षमता, स्वास्थ शिक्षा, रोजगार, व वेतन आदि, के संदर्भ में, महिलाओं और पुरुषों की, अलग—अलग क्षमताओं, रुचियां पर विचार नहीं कर लेते।

हम जानते हैं कि, महिला व पुरुषों, के बीच, शारीरिक, मानसिक और कार्य की, दृष्टि से, एक प्रकार का, अंतर पाया जाता है। महिलाओं में, पुरुषों की, तुलना में, जोखिम विमुखता का, औसत स्तर, थोड़ा अधिक पाया जाता है। हालांकि, यह अंतर स्थाई नहीं है, अर्थात् कार्य करने की, अवस्था में, यह अंतर समाप्त, भी हो सकता है।(12) इसके अलावा, उनमें (महिलाओं) प्रतिस्पर्धा करने की, क्षमता एवं उन लोगों से, बातचीत करने के, औसत स्तर में भी, लिंग—अंतर पाया गया है। जब इन सभी (लिंक—अंतर) को, ध्यान में, रखते हुए, एक प्रयोगिक अध्ययन किया गया तो, मिश्रित परिणाम प्राप्त हुए। इनमें से, एक परिणाम, ऐसा था कि, इस प्रकार के, लिंक अंतर, के कारण, श्रम बाजार पर, व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ था।(13) अर्थात काम करने से, लेकर, रोजगार, वेतन, कार्य की, दशाओं और विभिन्न प्रतिष्ठत फार्मो या संस्थानों में, कार्यरत अधिकारियों से, बातचीत करने में, महिलाओं की, उदासीनता आदि ने, आर्थिक क्षेत्र में, महिला व पुरुषों के बीच लिंग—असमानताओं को बढ़ावा दिया है।

आर्थिक क्षेत्र में, महिलाओं व पुरुषों, के बीच, असमानता का, एक अन्य कारण, शिक्षा है। हालांकि यह सत्य है कि, प्राथमिक शिक्षा, से लेकर, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में, लड़कियों का, प्रतिशत पूर्व की, तुलना में, कई अधिक बड़ा है। अर्थात शिक्षा की, दृष्टि से, लैंगिक अंतर, लगभग समाप्त हो गया है। लेकिन इस क्षेत्र शिक्षा में, उन लोगों या महिलाओं की, प्रगति धीमी रही है जो, गरीब, सीमांत, जातीयता, विभिन्न प्रकार की, परंपराओं एवं रूढ़ियों से, जकड़ी हुई हैं। आना रेवेंगा और सुधीर शेट्टी (2012) ने अपने पेपर में, उल्लेख किया है कि—विश्व के, लगभग, एक तिहाई विकासशील देशों में, प्राथमिक शिक्षा से, लेकर, उच्च शिक्षा तक, लिंग अंतर में, व्यापक पैमाने पर, कमी दृष्टिगोचर हुई है। आज विश्व के, विश्वविद्यालय में, कुल विद्यार्थियों में से, 15% का, प्रतिनिधित्व कर रही हैं। फिर भी, विकासशील देशों की, तुलना में, लगभग 35 मिलियन से अधिक, लड़कियां या महिलाएं स्कूल नहीं जाती हैं।(14) कई अर्थशास्त्रियों एवं विद्वानों का, कहना है कि, महिलाओं के, बीच, कम शैक्षिक स्तर (कम शिक्षा) का, कारण अल्प आयु में, विवाह या प्रजनन क्षमता में, वृद्धि होना है। अल्प आयु में, विवाह होने के कारण, जिम्मेदारियों एवं

परंपराओं के, कारण, उनकी (महिलाओं) शिक्षा, बीच में ही, बाधित हो जाती है। शिक्षा का, यह कम स्तर, श्रम बल से, लेकर, वेतन, रोजगार के स्तर को, काम करता है। इसीलिए महिलाएं, पुरुषों की, तुलना में, कम आय अर्जन करती हैं। इसके संबंध में, एक अन्य कारण, परिवार में, पुरुषों की, तुलना में, मजदूरी या अवैतनिक रूप से, काम करना भी है, और ग्रामीण क्षेत्र में, इन दोनों (महिला, पुरुषों) के बीच, कृषि भूमि का, असमान अर्थात महिलाएं कम कृषि भूमि आवंटन के, साथ, आय अर्जन का, कार्य करती हैं। यदि, हमें अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास, के स्तर में, वृद्धि करनी है तो, लैंगिक समानता की, अवधारणा को, अपनाना होगा। विश्व बैंक की रिपोर्ट (2012) यह स्पष्ट करती है कि—लैंगिक समानता, आज के इस, वैश्विक युग में, अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास के लिए, महत्वपूर्ण है। यह आर्थिक उत्पादकता को, बढ़ा सकती है, भविष्य की, पीढ़ी के लिए, विकास परिणाम में, सुधार ला सकती है।(15) आदि।

महिलाओं और पुरुषों, के बीच, व्याप्त असमानता का, एक अन्य कारण, स्वास्थ्य का, स्तर भी है, जोकि अधिक महत्वपूर्ण है। आर्थिक नीतिया एवं कार्यक्रम, यह स्पष्ट करते हैं कि, यदि महिलाएं स्वस्थ होगी तो, उसका उत्पादन की, मात्रा पर, स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलेगा, उनके कार्य करने की, क्षमता में, वृद्धि होगी, जो आगे सर्वाधिक उत्पादन की, ओर ले, जाएगी। परंतु, यह भाग्य की, बिड़बना है कि, महिलाओं का, स्वास्थ्य स्तर अत्यंत दयनीय रहा है। आना रिवेंज और सुधीर शेट्टी (2012) ने अपने अध्ययन में, उल्लेख किया है कि—हलाकि कि प्रत्याशित आयु की, दृष्टि से, महिलाएं, पुरुषों की, तुलना में, अधिक जीवित रहती हैं, लेकिन, यदि, हम विकासशील तथा विकसित देशों, के संदर्भ में, महिलाओं या लड़कियों की, आयु की, बात करें तो, यह पता चलता है कि, अधिक महिलाएं अल्प आयु में, मरती हैं।(16) जिसका कारण, पुरुषों द्वारा महिलाओं के, स्वास्थ्य स्तर पर, ध्यान ना देना है। एक वेबसाइट के अनुसार—वास्तव में, महिलाओं में, स्वास्थ्य का, खराब स्तर, महिलाओं को, सीमित आर्थिक निर्णय लेने की, स्थिति पैदा कर सकता है।(17) इससे यह स्पष्ट होता है कि, महिलाओं का, स्वास्थ्य का, स्तर, किस हद तक, उसके (महिला) आर्थिक स्तर को, प्रभावित कर सकता है। आपको बता दें की, संपूर्ण विश्व या विकासशील देशों में, 60 वर्ष से, कम आयु की, अधिकांश महिलाएं, अर्थात 3.9 मिलियन, लापता हो जाती हैं। उनमें से, लगभग दो—पांचवा हिस्सा, अपनी प्रजननं आयु के, दौरान मर जाती हैं। विश्व बैंक की, (2011) की, एक रिपोर्ट के अनुसार—उप—सहारा अफ्रीका में, अधिकांश महिलाएं, अपने प्रसब काल में, जानलेवा बीमारी, अर्थात एडस या एच.आई.वी., के कारण, अपने प्राण त्याग देती है।(18)

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

अतः कहा जा सकता है कि, महिलाओं का, खराब स्वास्थ्य का, स्तर भी, लिंग अर्थशास्त्र में, एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, जिस पर, ध्यान दिए बिना, किसी भी देश का, आर्थिक विकास या उत्पादकता में, ब्रद्धि करना संभव नहीं है।

लिंग अर्थशास्त्र का महत्व

आज के, इस वैश्विक युग में, जैसे–जैसे संपूर्ण विश्व, आर्थिक क्षेत्र में, प्रगति की, ओर तीव्र गति से, अग्रसर हो रहा है। वैसे–वैसे, हमें यह समझना भी, अति–महत्वपूर्ण है कि–किसी भी, देश के, आर्थिक विकास या उत्पादकता में, वृद्धि के, संबंध में, महिलाओं की, क्या भूमिका है, जिसे हम, लिंग अर्थशास्त्र में, व्याप्त लैगिंग असमानता के, माध्यम से, समझ सकते हैं। यह हमें, महिलाओं और पुरुषों, के बीच, वेतन, रोजगार या करियर जैसी क्षेत्रो में, व्याप्त असमानताओं को, समझने में, मदद करता है। जब, हम इन असमानताओं को, समझ जाएंगे तो, इनकी पहचान करके, उन्हें (असमानताओं) समाप्त करके, एक समावेशी एवं न्याय संगत समाज का, निर्माण करने का, प्रयास करेंगे।(19) किसी भी, देश की, अर्थव्यवस्था में, जब हम मानव पूंजी निर्माण का, अध्ययन करते हैं तो, उसमें महिला व पुरुष, दोनों शामिल होते हैं। इस दृष्टि से, लैंगिक असमानता नहीं होना चाहिए, परंतु ऐसा नहीं है। महिलाओं के, बिना, अर्थव्यवस्था अपनी पूरी क्षमता से कार्य नहीं कर सकती है। इसलिए लैंगिग समानता, बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह (लैंगिग समानता) न केवल महिलाओं, के लिए, एक मौलिक अधिकार है, बल्कि एक अति–महत्वपूर्ण आर्थिक अवसर भी है।(20) जब महिलाएं, अर्थव्यवस्था के, आर्थिक विकास में, एक समान रूप से, योगदान देंगी तो, अर्थव्यवस्था का, विकास होगा और अर्थव्यवस्था प्रगति के, उच्च स्तर पर, पहुंचेगी। वैसे आर्थिक विकास केवल, एक ही, घटक नहीं है बल्कि, इसमें आर्थिक वृद्धि भी, शामिल है। आर्थिक वृद्धि, प्रति व्यक्ति आय में, वृद्धि को, दर्शाती है, जबकि आर्थिक विकास, वेतन रोजगार, के अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर, स्वास्थ्य आदि में, विकास को, दर्शाता है, जिनका अध्ययन, हम मानव पूंजी संसाधन में, करते हैं, जिसमें साक्षरता, दर और जीवन प्रत्याशा को, विकास का, संकेतक माना जाता है।(21) और यह सभी, कारक पुरुषों व, महिलाओं पर, एक समान रूप से, लागू होती हैं। इसलिए लैंगिक असमानताओं को, दृढ़तापूर्वक समाप्त करने की, आवश्यकता है। परंतु यह, तभी संभव है, जब किसी देश की, सरकार, अपनी आर्थिक राष्ट्रीय नीतियों एवं कार्यक्रमों में, प्रमुखता से स्थान दें।

इस प्रकार लिंग का, अर्थशास्त्र, हमें महिला व पुरुषों, के बीच, व्याप्त असमानताओं, लिंग विविधतयों, रचनात्मक क्षमता, नवाचार, मानव क्षमताओं में, वृद्धि, कौशल, प्रतिभा और लिंग अंतराल के, संबंध में, महत्वपूर्ण से, परिचित कराता है, ताकि, हम, यह समझ सके कि, किसी भी, समाज या देश के, आर्थिक विकास में, जितना योगदान पुरुषों का है, ठीक

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

उतना ही, महिलाओं का भी है। महिलाओं, के बिना, कोई भी देश, ना तो, देश संचालित कर सकता है और ना ही अर्थव्यवस्था या आर्थिक विकास, इसलिए, आप, हम सभी के लिए, लिंग का अर्थशास्त्र महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

सामाजिक विज्ञान के, अर्थशास्त्र के, अंतर्गत, हम, जिस प्रकार से, देश की आर्थिक प्रगति, आय, उपभोग, निवेश, उत्पादन व रोजगार का, अध्ययन करते हैं। ठीक, उसी प्रकार से, लिंग का, अर्थशास्त्र है, जिसमें हम, विशेष रूप से, महिला व पुरुषों, के बीच, व्याप्त असमानताओं के, पीछे के, तंत्र को, समझने के लिए, आर्थिक सिद्धांतों व अनुभवजन्य तरीकों का, उपयोग करते हैं। यह संसाधन, के अंतर्गत, हम महिलाओं व पुरुषों की, गणना, एक समान रूप से करते हैं तो फिर, महिला व पुरुषों के, बीच, वेतन, रोजगार व श्रम बल, के मामले में, असमानताएं क्यों है?, जबकि विद्वानों ने, स्पष्ट रूप से कहा है कि, महिलाओं के, योगदान के, बिना, कोई भी देश, अपनी प्रगति नहीं कर सकता है। इस दृष्टि से, लिंग अर्थशास्त्र पर, अपना ध्यान आकर्षित करना और उसे समझना, अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसीलिए, इस विज्ञान (लिंग अर्थशास्त्र) में, बार–बार असमानताओं को, समाप्त करने की, बात की गई है।

इस प्रकार, यह शास्त्र, (लिंग का अर्थशास्त्र) हमें, समाज में, व्याप्त, लिंग असमानताओं को, समाप्त करने और महिला व पुरुषों को, एक समान रूप से, जीवन यापन से, लेकर, अधिकार प्राप्त करने के, बारे में, महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। परंतु, मेरे विचार से, यह तभी संभव है, जब पुरुष स्वयं, महिलाओं, के लिए, इस क्षेत्र में, कार्य करें और दृढ़तापूर्वक, इस (लिंग असमानता) को समाप्त करने का, बीड़ा उठाएं।

संदर्भ

1. Sevilla, A. (November 2020) Gender Economics:-An Assessment., IZA Institute of Labour Economics., Initiated By Deutsche Post Foundation., Discussion Paper Series. IZA DP Number 13877, November 2020.

2. The Economic Power of Women's Empowerment, Keynote Speech By Christine regarde, Managing Director, International Monetary Fund., https://www.imf.org/external/np/speeches/2014/091214.html.

3. Dr.Nilufer Cagatay (October 1998) Engendering Macro Economics and Macroeconomics Policy, United Nations Development Program WP. 6 (UNDP).

4. लिंग की परिभाषा, अर्थ, पहचान और उदाहरण https://leverageedu.com/blog/hi/लिंग., 14 अगस्त 2023.

5. UNDP, https://www.undp.org/gender/.

6. Ghulam, M. (2005) Introduction to Gender, Economic Development and Poverty Reduction., Munich Personal RePEC Archive, November 2005, Online at https://mpra.ub.uni-muenchen-de/689/MPRA. Paper No.689, Posted 07 Nov. 2006, UTC.

7. OECD-DAC (1998) Guidelines For Gender Equality and Women's Empowerment in Development Co-Operation, Development Co-Operation Guideline Series, OECD-Development Assistant Committee (DAC).

8. To See The Reference Number (5).

9. Kolovich, L. (2020) Gender Equality and Macroeconomics Outcomes:-Evidence and Policy implication., Oxford Review of Economic Policies., 36 (4).

10.Hsieh, C. (2019) The Allocation of Talent and U.S. Economic Growth, Econometrica, 85 (5), 1439-74.

11. Lund Berg, S. (2022) Gender Economics:-Dead Ends and New Opportunity., IZA Institute of Labour Economics., Discussion Paper Series. IZA DP Number 15217, April 2022.

12. Eckel, Catherine, C. and Philip, J. Grossman (2008) Men, Women and Risk Aversion:-Experimental Evidence., Handbook of Experimental Economics Result-1, (2008):1061-1073.

13. Buser, Thomas, Muriel Niederle and Hessel Oosterbeek (2021) Can Competitiveness Predict Education and Labour Market Outcomes., Evidence From Incentivized Choice and Survey Measures, No. W28916 National Bureau of Economic Research, 2021.

14. Ana Revenge and Sudhir Shetty (2012) Empowering Women is Smart Economics., Finance and Development, Vol.49, No.1, March 2012.

15. World Development Report (2012) Gender Equality and Development, (Washington).

16. To See The Reference Number (14).

17. Gender and Economics., https://www.ineteconomics.org/events/gender-and-economics.

18. World Development Report (2011) Gender Equality and Development, (Washington).

19. The Importance of Gender Economics., (www.linkedin.com) 22 July 2023, https://www.linkedin.com/puls/importance-gender-economic-chibuikem-dibor-alfred.

20. Ferrant, G. and Kolev, A. (2016) The Economic Cost of Gender Based Discrimination in Social Institutions., OECD Development Centre, June 2016.

21. To See The Reference Number (6).